P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-III*November-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

भारत में वृद्धावस्था की बढ़ती समस्याएँ एवं समाधान

सारांश

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति विश्व की सर्वोपरि संस्कृति मानी जाती है यहाँ के आदर्श, मूल्य तथा संस्कार सम्पूर्ण विश्व परिवेश में उदाहरण के तौर पर देखा जाता है। यहाँ पिता को साक्षात् भगवान या ईश्वर की श्रेणी में रखा जाता है जबकि माँ को देवी का रूप माना गया है। माता–पिता से बड़ा इस पृथ्वी पर कोई नहीं है ये शिक्षा हमें हमेशा प्रदान की गयी है और इसी रूप में हम माता–पिता का आदर करते हैं।

मुख्य शब्द : भारतीय सभ्यता, संस्कृति, विश्रृंखलित, सामाजिक समस्याएँ।

राजेन्द्र प्रसाद यादव
रीडर,
समाजशास्त्र विभाग,
राजकीय महिला महाविद्यालय,
ढिंढुई, पट्टी, प्रतापगढ।

प्रज्ञा सिन्हा
शोध छात्रा,
राम मनोहर लोहिया अवध
विश्वविद्यालय,
फैजाबाद (उ0प्र0)

प्रस्तावना

हम अपने माता–पिता को ही आदर्श मानकर अपना जीवन प्रारम्भ करते हैं हमारे पालन–पोषण से लेकर सम्पूर्ण समाजीकरण की प्रक्रिया में उनका महत्वपूर्ण येागदान होता है जिसका गुणगान कोई भी सन्तान अपनी भाषा में नहीं कर सकता क्योंकि यह बिन्दु शायद समझ से परे है। कोई भी माता–पिता अपने जीवन के सारे सपने अपने बच्चों में देखता है और उन्हें पूर्ण करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए अपना जीवन समाप्त कर देता है। ऐसा त्याग और संघर्ष कोई भी व्यक्ति किसी और के लिए न कभी किया है और न कर सकता है यह उच्च स्तरीय गुण किसी भी व्यक्ति के माता–पिता में ही हो सकता है। माता–पिता ही जीवन की वो नींव हैं जिस पर कोई भी व्यक्ति अपने जीवन की इमारत तैयार करता है।

"तुझे सूरज कहूँ या चन्दा, तुझे दीप कहूँ या तारा।
मेरा नाम करेगा रोशन, जग में मेरा राजदुलारा।।
आज उँगली थाम के तेरी, तुझे मैं चलना सिखलाऊँ।
कल हाथ पकड़ना मेरा, जब मैं बूढ़ा हो जाऊँ।।
मेरे बाद भी इस दुनिया में जिन्दा मेरा नाम रहेगा।
जो भी तुझको देखेगा तुझे मेरा लाल कहेगा।।"

उपर्युक्त पंक्ति में वर्णित प्रत्येक शब्द प्रत्येक वाक्य स्वयं में अनूठा है। यह महज किसी गीत की चंद पंक्ति नहीं है। यह हर उस व्यक्ति, हर उस पीढ़ी का सपना है जो वह अपनी भावी पीढ़ी के हृदय में अबोधपन से भर देना चाहती है। प्रत्येक नवयुगल में विवाहोपरान्त सन्तानोत्पत्ति की तीव्र उत्कण्ठा होती है और सन्तान के जन्म के पूर्व ही वह उसे लेकर सहस्रों स्वप्न अपनी आँखों में सजा लेता है। स्वयं कठोर से कठोर परिश्रम करके, कष्ट सहकर भी उसके लिए जीवन में सब कुछ सुलभ करने का अथक प्रयास करता है और स्वप्न में ही उसे राष्ट्र के शीर्षस्थ पद पर सुशोभित कर आत्मगौरव की आत्मानुभूति करता हैं कि उस सुखमय संसार में पहुँचकर उनकी सन्तान माता–पिता के सत्कृत्य उनकी त्याग, तपस्या हेतु हृदय में संजोए उद्गार को मुक्त कण्ठ से अभिव्यक्त करेगा, जिसे सुनकर उनकी तपस्या सार्थक हो उठेगी उनके बूढ़े नेत्रों में आभा लौट आयेगी।

स्वप्न की यह श्रृंखला विश्रृंखलित तब होती है जब उनका अबोध बालक युवा होता है। धन, पद प्रतिष्ठा, स्त्री, सन्तान इत्यादि सब कुछ प्राप्त कर लेता है, जीवन के सारे मर्म समझने योग्य हो जाता है। हर उत्तरदायित्व के निर्वाह की क्षमता विकसित हो जाती है, ऐसे में यदि वह कुछ नहीं समझ पाता तो वह है, माता–पिता क कुछ नहीं समझ पाता तो वह है, माता–पिता भावनाओं की, उनकी आवश्यकताओं को, उनके प्रति के स्वयं के दायित्वों को और उनकी यही नासमझी समाज में एक ऐसी समस्या को जन्म देती है, जिससे कहीं न कहीं समाज का लगभग प्रत्येक परिवार जूझ रहा है, और वह समस्या है वृद्धावस्था की समस्या। आधुनिकता की चकाचौंध में यह समस्याा उत्तरोत्तर हमारे समाज में वृद्धिक्रम में है।शोचनीय तथ्य यह है कि युवावर्ग कैसे यह भूल जाता है कि कल वे भी उसी दशा को प्राप्त होंगे, जहाँ आज उनके माता–पिता

हैं। मानव इतना बुद्धिजीवी होते हुए भी वह चक्रीय परिवर्तन को समझने में अक्षम होजाता है।जिससे वृद्धावस्था की समस्या का प्रादुर्भाव होता है।

भारतीय समाज की पहचान उसकी संस्कृति की सुदृढता है जो राम एवं श्रवण कुमार जैसे पुत्रों का इतिहास है, जो माता–पिता की इच्छा को आज्ञा मानकर अपना सम्पूर्ण जीवन हँसकर निछावर कर दिये हैं। ऐसी संस्कृति में जन्म लेने के बाद भी भारत देश में वृद्धावस्था की समस्या यह स्पष्ट करती है, कि हमारा सांस्कृतिक क्षरण हो चुका है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव हमारे जीवन पर इतना पड़ चुका है कि हम अपने परिवार तथा समाज में वृद्धों को यथोचित सम्मान तथा समुचित स्थान नहीं प्रदान कर पा रहे हैं। आज की युवा पीढ़ी वृद्धों के अनुभवों से कुछ सीखना नहीं चाहती अपितु उनके द्वारा दिये जाने वाले निःशुल्क ज्ञान को मिथ्या, सिरखाऊ, फिजूल की बकवास, अनावश्यक हस्तक्षेप मानकर वृद्धावस्था को ही एक समस्या मानने लगा है, जिससे वह शीघ्रातिशीघ्र निजात पाना चाहते हैं। वृद्धों के प्रति हृदय में सम्मान, उनके सेवा–सुश्रूषा करना आज के युवा वर्ग के लिए बोझिल सा हो गया है।

आज के युवा एवं वृद्धों के मध्य मुख्य भिन्नता वैचारिक मतभेद की है, जिसे हम जेनरेशन गैप या अन्तरपीढ़ी संघर्ष के नाम से सम्बोधित करते हैं। किन्तु प्रश्न यह है कि यह वैचारिक अन्तराल तो प्रत्येक पीढ़ी के मध्य व्याप्त रहा है, तो वर्तमान पीढ़ी ही इसे लेकर इतनी व्यग्र क्यों है। इलियट के शब्दों में ''प्रत्येक पीढ़ी यह विश्वास करती है कि उसके उत्तराधिकारी सीधे पतन की गर्त में जा रहे हैं, वे यह भूल जाते हैं कि वे भी कभी अपने बड़ों की भयावह चिन्ता का विषय रहे हैं, और जो परिवर्तन लाने में वे साधन बने हैं, आवश्यक रूप से विनाशकारी सिद्ध नहीं हुए हैं।'' इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक युवा तथा वृद्ध पीढ़ी, समय तथा परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को परिवर्तित करने का प्रयास करे। अन्यथा समस्या और भी भयावह होती जाएगी।

भारत में वृद्धावस्था की समस्या एक सार्वभौमिक स्वरूप ग्रहण कर चुकी है क्योंकि किसी न किसी रूप में आज यह समस्या समाज के सभी परिवारों में देखी जा रही है, जिसका प्रमुख कारण दो पीढ़ियों के मध्य विभिन्न मुद्दों में पाया जाने वाला मतभेद या टकराव है। क्योंकि सामाजिक संरचना में होने वाले तीव्र परिवर्तनों के साथ युवा पीढ़ी तो स्वयं को सरलता से परिवर्तित कर लेती है, किन्तु हमारी वृद्ध पीढ़ी अपने परम्परागत मूल्यों के साथ किसी प्रकार का समझौता करना नहीं चाहती, वह ऐसा महसूस करती है कि आज का युवा वर्ग या पीढ़ी गलत मार्ग पर उन्मुख है, जिन्हें वह सुधारना चाहती है और उनकी यही सुधारवादी प्रवृत्ति उनमें आपसी संघर्ष को जन्म देती है। कुछ मुद्दों यथा– प्रेम विवाह, अन्तर्जातीय सम्बन्ध, नशाखोरी, वस्त्र विन्यास, भोजन इत्यादि को लेकर उनमें टकराव इतना बढ़ जाता है कि वे एक दूसरे के साथ सामंजस्य स्थापित करने में असुविधा अनुभव करने लगते हैं।

इसके अतिरिक्त वर्तमान आधुनिक युग में औद्योगीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकण आदि परिवर्तन की नवीन प्रक्रियाओं के फलस्वरूप परम्परागत सामाजिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, जिसका प्रभाव हमारी पारिवारिक संरचनाओं पर तीव्रतर रूप से पड़ रहा है। आज की युवा पीढ़ी आधुनिकता एवं फैशन के नाम पर वह ग्रहण कर रही है, जो मात्र उसके ही नहीं अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र के हित में घातक है। मानदण्डों को सुरक्षित तथा संरक्षित करने के प्रयास के फलस्वरूप ही दोनों पीढ़ियों में सामंजस्य का अभाव हो गया है।

इसके अतिरिक्त भी यदि देखा जाए तो कहीं न कहीं रिश्तों की मान्यता, उनकी मर्यादा, उनकी निष्ठा तथा पारस्परिक विश्वास में कमी हो गयी है। आज की युवा पीढ़ी बाबा–दादी, पापा–मम्मी, चाचा–चाची, मामा, मौसी, बुआ, बहन, भाई जैसे महत्वपूर्ण रिश्तों में तनिक भी रुचि नहीं रखती। उनके साथ बैठना, विचार–विमर्श करना, बुजुर्गों के विचारों को सुनना वह अपनी शान और आधुनिकता के विपरीत समझती है। उनके विचारों को दकियानूसी मानती है जिसे सुनने से वे आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में पिछड़ जाएँगे। बुजुर्गों के विचारों को सुनना, उनके जीवन के अनुभव को जानना उनके लिए समय खराब करने के समान है। अतः पारस्परिक वार्तालाप के अभाव में इन रिश्तों में पारस्परिक दूरियाँ बढ़ रही हैं। किन्हीं–किन्हीं परिवारों में तो बुजुर्गों की स्थिति इतनी दयनीय है कि उनके परिजन उन्हें दो वक्त की रोटी तक मात्र सामाजिक भय से देते हैं उनमें वृद्धों के प्रति दया, करुणा, सहानुभूति, सहयोग जैसी मानवीय भावनाएँ मृत हो चुकी हैं।

स्वयं को आधुनिक और सभ्य कहलाने वाली युवा पीढ़ी यह विस्मृत हो चुकी है, कि उन्हें इस स्थान तक पहुँचने में किसने अपने खून–पसीना की कमाई पानी की तरह उन पर लुटाई है। आज वे अपने भाग–दौड़ भरे व्यस्त जीवन में यह तक भूल जाते हैं कि उनके बुजुर्ग माता–पिता को सिर्फ दवा की आवश्यकता नहीं है। उन्हें अच्छे कपड़ों और उत्तम भोजन का भी शौक नहीं है। वे तो महज अपनी सन्तानों का सानिध्य पाना चाहते हैं। उनके मुख से अपने संघर्ष की व्यथा सुनना चाहते हैं। वे मात्र यह चाहते हैं कि उनकी सन्तान यह बोध करे कि उनके माता–पिता ने उनके प्रति अपने दायित्वों का बखूबी निर्वहन किया है। हमारी बड़ी से बड़ी गलती को किस प्रकार हँसकर क्षमा कर दिया है। हमारी छोटी से छोटी जरूरतों का किस प्रकार ख्याल रखा है। अपने जीवन की सम्पूर्ण जमा पूँजी उनके विकास के लिए बिना तनिक भी विचार किये खर्च कर दी है। बुजुर्ग व्यक्ति युवा पीढ़ी से मात्र भावनात्मक लगाव प्राप्त करना चाहते हैं। वे महत्वहीन एवं निरीह प्राणी की भाँति घर के किसी कोने में नहीं पड़े रहना चाहते हैं, अपितु घर, परिवार, समाज में अपना समुचित स्थान चाहते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम बुजुर्गों की भावनाओं को समझें, उनकी आवश्यकताओं को समझें, क्योंकि जब तक बुजुर्गो की मनोदशा को समझ कर उनकी समस्याओं का समुचित समाधान नहीं किया जाएगा, तब तक हमारे समाज में अन्तर्पीढी संघर्ष की समस्या समाप्त नहीं हो सकती, और पीढ़ियों का यह अन्तराल उनके मध्य की पारस्परिक दूरी को बढ़ाता जाएगा।

1. बुजुर्गों की समस्याओं को समाप्त करने हेतु सर्वप्रथम आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों के समाजीकरण में पूरी सावधानी रखी जाए उनमें बड़ों के प्रति आदर, सम्मान की भावना जागृत की जाए, बुजुर्गों की बातों को सुनने,

उसे मानने का गुण विकसित किया जाए, जिससे बुजुर्ग स्वयं को समाज रूपी वृक्ष की सूखी डाली न मानकर मजबूत तना समझें।

2. सामाजिक परिवेश में श्रेष्ठजनों के आदर, सम्मान के प्रति एक सार्थक वातावरण तैयार किया जाय जिसका प्रभाव हमारी भावी पीढ़ी के व्यक्तित्व विकास पर पड़े।
3. उन प्रथाओं एवं परम्पराओं का कठोरता से पालन किया जाये जिनका प्रभाव हमारी संस्कृति एवं सभ्यता में मजबूती प्रदान करती है।
4. हमारी युवा पीढ़ी को यह पुनर्विचार करना चाहिए कि हमें अपने माता–पिता तथा अन्य श्रेष्ठजनों से आदर्श व्यवहार करना चाहिए।
5. सामाजिक परिवेश में ऐसे आदर्श एवं मूल्य विकसित किये जाएं जो हमारे माता–पिता एवं अन्य श्रेष्ठ जनों को अवहेलना से बचाये रखें और उनका जीवन सुखमय बना रहे।
6. मानवीय दृष्टिकोण का उत्तरोत्तर विकास हो, इस तथ्य का शिक्षण कार्य में समायोजन अनिवार्य रूप से किया जाए।
7. बुजुर्गो का सम्मान करें तथा उनकी बातों को अनसुना न करें तथा उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखें।
8. बुजुर्गों की सुरक्षा हेतु ऐसे कानून निर्मित किये जाएँ, जिससे यदि उनकी इस अवस्था में उनकी सन्तान अपने उत्तरदायित्वों से विमुख भी होना चाहे, तो कानून द्वारा उन्हें सुरक्षा तथा संरक्षण प्रदान किया जाए।
9. सरकार द्वारा ऐसे स्थलों का निर्माण कराया जाए, जहाँ बुजुर्ग व्यक्ति अपने उम्र के व्यक्तियों के साथ रुचि के अनुसार मनोरंजन कर सकें।
10. बुजुर्गो की मुख्य समस्या उनका एकाकीपन है, इसलिए उन्हें उपेक्षित करने के स्थान पर उन्हें उनके रुचिकर कार्यों में व्यस्त रखें। उनके जीवन तथा अनुभवों को सुनें, तथा उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें।
11. ऐसे निराश्रित एवं असहाय बुजुर्ग जिन्हें घर से निष्कासित कर दिया गया है, उनके लिए (ओल्ड एज होम) का निर्माण कराया जाए, जहाँ वे अपने समूह के व्यक्ति के साथ निवास कर सकें तथा उनकी मूलभूत समस्याओं का समाधान भी होता रहे।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि वर्तमान ही भावी इतिहास है, अर्थात् आज का युवा ही कल का वृद्ध होगा। इसलिए यदि आज हमारे अन्तस में हमारे बुजुर्गों के प्रति चेतना न आयी तो हमारी सन्तानें भी हमसे अनजाने में यही शिक्षा ग्रहण कर लेगी इसलिए हमें सेवा भाव से न सही शिक्षण भाव से ही उनके समक्ष यह आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। हमें बुजुर्गों को निष्क्रिय और निरीह प्राणी नहीं मानना चाहिए। अपितु यह सोचना चाहिए कि कल वे भी वहीं थे जहाँ हम आज हैं, और कल हम भी वहीं होंगे जहाँ आज वे हैं। हमें उन्हें वही प्रदान करना चाहिए जो हम स्वयं के लिए अपनी सन्तानों से अपेक्षित करते हैं यदि इन बातों पर ध्यान रखा तो हमें जीवन में बुजुर्गों का सानिध्य, सहयोग और आशीर्वाद प्राप्त हो सकेगा। उन्हें भी अपना जीवन अपनी आयु अभिशाप नहीं लगेगी। अन्यथा बुजुर्गों की होने वाली दुर्दशा से कहीं न कहीं संचेतना का भाव जाग्रत होगा, जिससे हमारी भावी पीढ़ी प्रभावित होगी। रिश्तों की मर्यादा उनके समर्पण की भावना में कमी आएगी। अतः हमें वृद्ध पीढ़ी से सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए, उनके प्रति हृदय में आदर का भाव रखना चाहिए, उन्हें अपना सहयोग एवं सेवा प्रदान करना चाहिए, जिससे आदर्श परिवार, समाज एवं राष्ट्र का निर्माण हो सके।

सन्दर्भ

1. सिन्हा, सुमन रानीः''वृद्धजनों का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' प्रकाशित शोध प्रबन्ध, के0के0 पब्लिकेशन, इलाहाबाद
2. वन्दना रानीः''वृद्धजन समस्याएं एवं प्रत्याशाएँ''प्रकाशित शोध प्रबन्ध, एम0जे0पी0 रुहेलखण्ड वि0वि0 बरेली, 1998
3. पुरोहित, सी0आर0 एवं शर्मा, आर0ः''ए स्टडी आफ एजेड 60 इयर्स एण्ड एबव इन सोशल प्रोफाइल''
4. राठौर, जे0एस0ः''वृद्धजनों की स्थिति एवं जीवन दृष्टि'' (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन) 'मानव' वर्ष 21 अंक 4 अक्टूबर–दिसम्बर, 1993
5. भाटिया, एच0एस0ः''एजिंग एण्ड सोसाइटी''आर्यन बुक सेन्टर, उदयपुर, 1983
6. साहनी, भीष्मः ''चीफ की दावत'' ''कहानी पथ''सरल प्रकाशन, आगरा।
7. श्रीवास्तव, ए0आर0एन0ः ''भारतीय सामाजिक समस्याएँ''के0के0 पब्लिकेशन,कटरा, इलाहाबाद।
8. मुकर्जी, आर0एन0ः''सामाजिक समस्याएँ''विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली, 2003
9. पति, पी0एन0 एण्ड बी0जेनाः ''एजेड इन इण्डिया'' सोशियो–डेमोग्रैफिक डायमेन्शन', आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1989
10. सिंह श्यामधर एण्ड सिंह मीराः''सामाजिक समस्याओं का समाजशास्त्र'' मिश्रा ट्रेडिंग कारपोरेशन, वाराणसी, 2005
11. विन स्टोक्स, आर0एच0 एण्ड लिण्डा के0जे0ः''हैण्ड बुक ऑफ एजिंग एण्ड द सोशल साइंसेज'' अकैडमिक प्रॉसिस इंक सैन डिगो।
12. कुमार, आनन्दः''इण्डियन सोशल प्राबल्म्स'' साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा, 2004
13. मदन, जी0आर0ः''भारतीय सामाजिक समस्याएँ'' विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली
14. अहूजा, रामः''सामाजिक समस्यायें''रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
15. राजोरा, सुरेश चन्द्रः''समकालीन भारत की सामाजिक समस्यायें'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकाडमी, जयपुर, 2005